ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-अष्टम विषय-हिन्दी

दिनांक—25/04/2021 महायज्ञ का पुरस्कार -यशपाल जैन

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

<u>महायज्ञ का पुरस्कार</u>

-यशपाल जैन

एक कथा सुनन में आती है-

एक धनी सेठ थे- अत्यंत विनम्र और उदार । धर्मपरायण इतने कि भगवा वस्त्र पहने कोई भी साधु-संत उनके द्वार पर आ जाता तो निराश न लौटता, भरपेट भोजन पाता। भंडार का द्वार सबके लिए खुला था, जो हाथ पसारे, वही पाए। सेठ ने यज्ञ बहुत से किये थे और दान में न जाने कितना धन दीन-दुखियों को दिया था।

पर अकस्मात् बुरा वक्त आ गया और सेठ की हालत बहुत खराब हो गयी। खज़ाने खाली हो गये।साथी-संगी ने राह पकड़ी और यहाँ तक नौबत आयी कि सेठ भूखों मरने लगे। उन दिनों एक प्रथा प्रचलित थी कि यज्ञों का क्रय-विक्रय हुआ करता था। छोटा-बड़ा जैसा यज्ञ होता है, तदनुसार उसका मूल्य मिल जाता। जब बहुत तंगी हुई तो एक दिन सेठानी ने कहा, “न हो तो एक यज्ञ ही बेच
~~~~~~~~~~

डालो।" सुनकर पहले तो सेठ बहुत दुखी हुए, पर बाद में अपनी मोहताजी का विचार कर यज्ञ बेचने के लिए तैयार हो गये। सेठ के यहाँ से दस-बारह कोस की दूरी पर कुंदनपुर नाम का एक नगर था, जिसमें एक बहुत बड़े सेठ रहते थे। लोग उन्हें, "धन्ना सेठ" कहा करते थे। झूठ-सच की तो परमात्मा जाने, यह अफवाह थी कि उनकी सेठानी को कोई दैवी शक्ति प्राप्त है, जिससे वह तीनों लोकों की बात जान लेती हैं। धन की उनके पास कमी न थी। विपद ग्रस्त सेठ ने उन्हीं के हाथ यज्ञ बेचने का विचार किया।

दूर की मंजिल थी, सेठानी जैसे-तैसे पड़ोसी से थोड़ा-सा आटा माँगकर लायी और उसने चार मोटी रोटियाँ बनाकर सेठ के साथ बाँध दी। बड़े तड़के उठकर सेठ कुंदनपुर की ओर चल दिये। गरमी के दिन थे। सेठ ने सोचा कि सूरज निकले तब तक जितना पार कर लूँ, उतना ही अच्छा। यह सोचकर वे खूब तेज़ चलने लगे। लेकिन आधा रास्ता पार करते-करते धूप में इतनी तेज़ी आ गयी कि चलने में उन्हें कष्ट होने लगा। पसीने से उनकी सारी देह लथपथ हो गयी और भूख भी सताने लगी।

सामने वृक्षों का एक कुंज और कुआँ देखकर सेठ ने विचार किया कि यहाँ थोड़ी देर रुककर भोजन और विश्राम कर लेना चाहिए। यह सोच, वे उस कुंज की ओर बढ़े। पोटली में से लोटा-डोर निकाल पानी खींचा और हाथ-पैर धोए। फिर एक लोटा पानी लेकर पेड़ के नीचे आ बैठे और खाने के लिए रोटी निकालकर तोड़ने वाले ही थे कि देखते क्या हैं कि निकट ही कोई हाथ-भर की दूरी पर एक कुत्ता पड़ा छटपटा रहा है। बेचारे का पेट कमर से लगा था। सेठ की रोटी खोलते देख वह बार-बार गरदन उठाकर कुछ याचना करना चाहता था, पर दुर्बलता के कारण उसकी गरदन गिर-गिर जाती थी।

सेठ का हृदय दया से भर आया-लगता है बेचारे को कई दिन से खाना नहीं मिला दीखता है, तभी तो उसकी यह हालत हो गयी है। सेठ ने एक रोटी हाथ में उठायी और टुकड़े-टुकड़े कर कुत्ते के सामने डाल दी। कुत्ता भूखा तो था ही, धीरे-धीरे सारी रोटी खा गया, अब उसके शरीर में थोड़ी जान आती दिखी। मुँह उठाकर वह सेठ की ओर देखने लगा, मानो उनकी इस कृपा के लिए कृतज्ञता प्रकट कर रहा हो। पेट अब भी उसका कमर से लगा था। सेठ ने सोचा कि एक रोटी इसे और खिला दूँ, तो फिर चलने-फिरने योग्य हो जाएगा।

यह सोच कर उन्होंने एक रोटी और उठायी और टुकड़े-टुकड़े करके उसे खिला दी। दो रोटियाँ खाकर कुत्ते के शरीर में शक्ति आ गयी और वह खिसकर सेठ के समीप आ गया। सेठ ने देखा कि अभी वह अच्छी तरह चल नहीं पा रहा है। आस-पासदूर-दूर तक कोई बस्ती दिखाई नहीं दे रही थी। सेठ ने सोचा, एक रोटी इसे और दे दूँ तो फिर यह अच्छी तरह चल-फिर सकेगा, नहीं तो चार कदम खिसक कर फिर गिर जाएगा। मेरा क्या है? जैसी दो खायी वैसी एक और, फिर शाम तक तो कुंदनपुर पहुँच ही जाऊँगा।

सेठ ने तीसरी रोटी उठायी और कुत्ते को खिला दी।

एक रोटी बची। उसे लेकर वे स्वयं खाने बैठे। कुत्ते की आँखें अब •भी उनकी ओर जमीं थीं। सेठ ने देखा कि उन आँखों में करुणा भरी है, उल्लास नहीं आया है। सहसा सेठ के मुँह से निकला, “हाय! बेचारा न जाने कितने दिनों से भूखा है। "

क्रमश: